

महापंडित राहुल सांकृत्यायन एवं बौद्ध धर्म

डॉ० सुषमा श्री
पोस्ट डॉक्टरल फेलो
आई० सी० पी० आर० (नई दिल्ली)
नव नालंदा महाविहार (नालंदा)

Email: kumarisushmashree598@gmail.com

Abstract: Mahapandit Rahul Sankrityayan was a man of multifaceted personality and a great scholar of Buddhism. He risked his life for the propagation and spread of Buddhism and traveled through difficult terrains. The extraordinary work Rahul Ji did in rediscovering and bringing to light the then extinct Buddhism in India and its related rare and magnificent texts is unparalleled and unforgettable.

The revival of Buddhism, which had disappeared centuries ago, by the will of the people is a unique event in history. Buddhism was ousted from its birthplace. A crucial link in the historical development of Indian history had been severed. In the nineteenth and twentieth centuries, some enthusiastic youths paid attention to it, and once again, the land of India began to enrich its life with Buddhist philosophy and teachings. The first attempt to revive Buddhism in India was made by a Buddhist monk from Sri Lanka, Anagarika Dharmapala. Subsequently, three guru brothers - Bhadant Anand Kausalyayan, Rahul Sankrityayan, and Bhikshu Jagdish Kashyap played a significant role in the development of Buddhism. Tripitakacharya Rahul Sankrityayan dedicated the golden period of his life to the development of Buddhist literature, philosophy, culture, and religion. He had deep devotion towards Buddhism. This research paper is a modest attempt to shed light on his contributions to the development of Buddhism.

Keywords: Rahul Sankrityayan, Buddhism in India, Buddhist revival, Bhadant Anand Kausalyayan, Propagation of Buddhism

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी महापंडित राहुल सांकृत्यायन बौद्ध धर्म के बहुत बड़े विद्वान थे। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने अपनी जान की बाजी लगाकर दुर्गम देशों की यात्राएँ की। भारत में विलुप्त बौद्ध धर्म एवं उससे सम्बन्धित महान दुर्लभ ग्रन्थों को खोजकर उसे प्रकाश में लाने का जो अदभुत कार्य राहुल जी ने किया वह अपूर्व और अविस्मरणीय है।

बौद्ध धर्म जो शताब्दियों पूर्व लुप्त हो गया वह जनता की इच्छा से पुनर्जीवित हो ऐसी घटना इतिहास में अद्वितीय है। बौद्ध धर्म अपनी ही जन्मभूमि से बेदखल कर दिया गया था। भारतीय इतिहास में ऐतिहासिक विकास की महत्वपूर्ण कड़ी अलग जा छिटकी थी। उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दियों में कुछ उत्साहित तरुणों ने इसकी ओर ध्यान दिया और फिर से भारत-भूमि बौद्ध धर्म-दर्शन से अपने जीवन को संवारने लगी। भारत में बौद्ध धर्म को पुनरुत्थान का प्रथम प्रयास श्रीलंका के एक बौद्ध भिक्षु अनागारिक धर्मपाल ने किया। तत्पश्चात् तीन गुरुभाई - भदन्त आनन्द कौसल्यायन, राहुल सांकृत्यायन और भिक्षु जगदीश काश्यप ने बौद्ध धर्म के विकास में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। त्रिपिटकाचार्य राहुल सांकृत्यायन ने बौद्ध साहित्य, बौद्ध दर्शन, बौद्ध संस्कृति एवं बौद्ध धर्म के विकास के लिए अपने जीवन का सबसे स्वर्णिय समय समर्पित किया। बौद्ध धर्म के प्रति उनकी अगाध निष्ठा थी। बौद्ध धर्म के विकास में उनके योगदान की ओर प्रकाश डालने का एक छोटा सा प्रयास मेरे द्वारा इस शोध पत्र में किया जा रहा है।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि किसी मानव समुदाय की सभ्यता अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचकर नष्ट हो जाती है। भौगोलिक गतिविधि भी बचे प्राचीन अवशेषों को हमारी आँखों से ओझल कर देती है। फिर भी इस नष्ट हुयी सभ्यता में मौजूद संस्कृति, साहित्य, दर्शन, धर्म आदि जनमानस के किसी कोने में छिपी रहती है और अनुकूल समय पाकर नवसृजित सभ्यता के सामने प्रकट होकर सबको चौंका जाती है।

वर्तमान समय में मानव जीवन में समस्याओं का अम्बार सा लगा है। इसके परित्राण के लिए मनुष्य अपने अतीत के गौरवगाथा को देखने-समझने के लिए बाध्य है। जब समाज में समस्याओं का कोलाहल अधिक हो जाता है, तो उसी समाज से एस विभूतियों का जन्म होता है जो उस तप्त समाज को कुछ ठंडक पहुंचा सके। उसी विभूतियों में एक नाम है- 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन' जिन्होंने भारत भूमि से लुप्त प्रायः हो चुके बौद्ध वाङ्मय को पुनर्जीवित कर प्रकाश में लाया।

जब नवीन धर्म की आवश्यकता जन समुदाय को होती है तब साथ में नवीन संस्कृत की अपेक्षा भी मानव मात्र करता है। नए धर्म जब प्रचार-प्रसार पाकर बहुआयामी हो जन-जन में रचना-वसना शुरू करता है, तब एक नई संस्कृति पनप उठती है। इसी संस्कृति में नए-नए दार्शनिक, साहित्यकार, विचारक, वैज्ञानिक का आविर्भाव होता है। यहाँ यह स्पष्ट करना समीचीन जान पड़ता है कि दर्शन, संस्कृति में ही अन्तर्निहित है।

मनुष्य ने धर्म का जो विकास दर्शन-शास्त्र के रूप में जो चिन्तन, साहित्य, संगीत और कला का जो सृजन किया, सामूहिक जीवन को हितकर और सुखी बनाने के लिए जिन प्रथाओं व संस्थाओं को विकसित किया – उन सबका समावेश हम 'संस्कृति' में करते हैं।¹ डॉ० सर्वपल्ली

¹ भारतीय संस्कृति का विकास, सत्केतु विद्यालंकार, पृ० सं० – 11.

राधाकृष्णन दर्शन शब्द का व्युत्पत्ति एवं अर्थ को व्याख्यायित करते हुए लिखते हैं – “दर्शन शब्द की उत्पत्ति ‘दृष’ धातु से हुयी है, जिसका अर्थ है, देखना। यह दर्शन या तो इन्द्रियजन निरीक्षण हो सकता है या प्रत्ययी ज्ञान अथवा अन्तर्दृष्टि द्वारा अनुभूत हो सकता है। जब बौद्ध धर्म का दायरा बढ़ने लगा तब साथ-साथ दार्शनिक विषय का विकास होता गया। बुद्ध का माध्यमिक दर्शन समय की माँग थी। “प्राचीन बौद्ध धर्म एक ऐसे दर्शन की रूपरेखा को प्रस्तुत करता है जो वर्तमान काल की क्रियात्मक माँगों की पूर्ति के लिए सर्वथा अनुकूल है और धार्मिक विश्वास और भौतिक विज्ञान के मध्य में जो विरोध प्रतीत होता है उसमें परस्पर समन्वय स्थापित करने में पूर्णतया सहायक है।²

भारतीय दर्शन के दो प्रमुख महत्वपूर्ण वर्ग हैं – आस्तिक एवं नास्तिक। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत आंतरिक दर्शन के अंतर्गत हैं एवं जैन, चार्वाक, बौद्ध नास्तिक के अंतर्गत आते हैं। बौद्ध दर्शन के चार सम्प्रदाय हुए – वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार और माध्यामिक है।

बौद्ध दर्शन के इन्ही चारों सम्प्रदायों के दार्शनिकों की विषय व्याख्या राहुल जी के द्वारा की गई है। ‘दर्शन-दिग्दर्शन’ की भूमिका में राहुल जी लिखते हैं – ‘दर्शन का सुवर्ण युग’ 700 ई० पू० से बाद की तीन और चार शताब्दियाँ है। इसी वक्त भारत में उपनिषद से लेकर बुद्ध तक के और यूरोप में थेलस से लेकर अरस्तू तक के दर्शनों का निर्माण होता है। उधर दर्शन की भारतीय शाखा 400 ई० पू० के बाद की चार शताब्दियों में राख की ढेर में चिंगारी बनी पड़ी रहती है। किन्तु ईसा की पहली से छठी शताब्दी तक विशेषकर पिछली तीन शताब्दियों में वह अपना कमाल दिखलाती है।³

यही वह समय था जब बौद्ध दर्शन वाङ्मय में पाँच प्रमुख दार्शनिक – नागार्जुन, असंग, वसुबन्धु, दिग्नाग और धर्मकीर्ति की दार्शनिक मान्यता बौद्ध दर्शन को उतुंग शिखर पर ले गया। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने उनके दार्शनिक मान्यताओं, सिद्धान्तों को खोज निकाला और

² भारतीय दर्शन, प्रथम खण्ड, डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, पृ० सं० – 35.

³ दर्शन दिग्दर्शन, राहुल सांकृत्यायन, भूमिका से।

उसकी नई व्याख्या कर क्लिष्ट सिद्धान्तों को सर्वसुलभ बनाने का प्रयास किया। आज यह मानने में तनिक भी संदेह नहीं है कि राहुल जी के प्रयास से ही 'वादन्याय' (धर्मकीर्ति का दार्शनिक ग्रन्थ) जैसे अमूल्य दार्शनिक ग्रन्थ हमारे सामने आ सका। इसके लिए राहुल जी ने तिब्बत की

चार बार (1926 ई०, 1934 ई० और 1938 ई०) यात्रा की।⁴ बौद्ध दार्शनिक ग्रंथों की खोज के सिलसिले में राहुल जी 'साक्य' समय आदि तिब्बती मठों एवं विहारों का खूब भ्रमण किया।

'मेरी जीवन यात्रा' में राहुल जी ने ग्रन्थों की खोज का विवरण के साथ-साथ ग्रन्थों के दर्शन होने पर उत्सुकता का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि – "तालपत्र की पोथियाँ अपने पतले लम्बे आकार के कारण आसानी से पहचानी जा सकती थी।

कुल 38 बंडल मिले, जिसे उतारना शुरू किया फिर वादन्याय मूल की दो पोथियाँ मिली। मैं धर्मकीर्ति और दिग्नाग के पीछे दीवाना था और 'वादन्याय' धर्मकीर्ति की पुस्तक थी। ल्हासा में वादन्याय की टीका मिली थी, लेकिन मूल वहाँ नहीं थी। मैंने मूल को भोट-अनुवाद की सहायता से थोड़ा-थोड़ा संस्कृत में करना शुरू किया।

बौद्ध दर्शन के विद्वानों में नागार्जुन, असंग, वसुबन्धु, दिग्नाग, धर्मकीर्ति आदि के नाम समादृत हैं। इन्हीं दार्शनिकों के विलुप्त ग्रंथों को प्रकाश में लाकर उसका विश्लेषण कर राहुल सांकृत्यायन ने दर्शन की यात्रा में विषद योगदान दिया है।

नागार्जुन की कालावधि के संबन्ध में राहुल जी ने अपने ग्रन्थ 'बुद्धचर्या' में स्पष्ट लिखते हैं कि – ईसा की प्रथम शताब्दि में जिस समय वैभाषिक सम्प्रदाय उत्तर में बढ़ता जा रहा था, उसी समय दक्षिण के विदर्भ देश में आचार्य नागार्जुन पैदा हुए।⁵

राहुल जी के अनुसार "असंग" गांधार देश की राजधानी पुरुषपुर (आधुनिक पेशावर) में ईसा की चौथी सदी में कौशिक गोत्रीय एक ब्राह्मण कुल में पैदा हुए थे।⁶ असंग की सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'योगाचर्याभूमि' के विषय में राहुल जी ने लिखा है कि इतना ही कहना पर्याप्त है

⁴ पाँच बौद्ध दार्शनिक, राहुल सांकृत्यायन, भूमिका से।

⁵ बुद्धचर्या, राहुल सांकृत्यायन प्राक्कथन से, पृ० सं० – 8.

⁶ पाँच बौद्ध दार्शनिक, राहुल सांकृत्यायन, पृ० सं० – 38.

कि इसी पुस्तक के नाम पर बौद्ध विज्ञानवाद, योगाचार दर्शन के नाम प्रसिद्ध हुआ।⁷ जी असंग द्वारा 'प्रतीत्यसमुत्पाद' की व्याख्या की चर्चा अपने ग्रन्थ 'बौद्ध-दर्शन' में किया गया है। इसी ग्रन्थ में राहुल जी ने असंग की कृतियों की सूची देकर उनकी रचनाओं से हमें अवगत कराया है।

वसुबन्धु की दोनों प्रसिद्ध कृति – अभिधर्मकोष और विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि पर टीकाओं एवं व्याख्याओं की सहायता से वसुबन्धु के बौद्ध दर्शन में योगदान को निम्न शब्दों में रेखांकित किया है – वसुबन्धु वैभाषिक और योगाचार दोनों के ऊपर गम्भीर ग्रन्थों के प्रणेता थे।

'अभिधर्मकोष' को उन्होंने आठ स्थानों (परिच्छेदों) में लिखा है, जिनके विषय हैं – धातु, लोकधातु, कर्म, अनुराग, आर्य-मार्ग, ज्ञान एवं ध्यान निर्देश। दिग्नाग का प्रमुख ग्रन्थ 'प्रमाण-समुच्चय' जो अपने मूल(संस्कृत) रूप में नहीं है। तिब्बती भाषा में इसके अनुवाद प्राप्त है, जिसे राहुल जी ने संस्कृत में अनुवाद किया है।

नालन्दा के प्रधान आचार्य धर्मपाल के शिष्य 'धर्मकीर्ति' छठी-सातवीं शताब्दी के महान दार्शनिकों में परिगणित किये जाते हैं।

इनकी सबसे चर्चित दार्शनिक ग्रन्थ 'प्रमाणवार्तिक' को राहुल जी ने तिब्बत के 'साक्य' (तिब्बत का विहार, मठ) से खोज निकाला। इस ग्रन्थ की खोज के लिए तो कहा जाता है कि राहुल जी अपने जीवन में और न कुछ लिखते हैं तो भी प्रमाणवार्तिका उनको अमर बना देता।

पाँच बौद्ध दार्शनिकों के विलुप्त ग्रंथों को प्रकाश में लाकर राहुल जी बौद्ध दर्शन का बड़ा उपकार किया साथ ही कुछ अन्य दार्शनिक जो बौद्ध दर्शन के मर्मज्ञ थे उनकी भी महत्ता वे विश्वमुदाय के समक्ष प्रस्तुत किए। प्रसिद्ध तिब्बती दार्शनिक चोङ्-ख-पा (1357-1419 ई०) जैसे दार्शनिकों के तिब्बत, मंगोल आदि देशों में बौद्ध दर्शन के क्षेत्र में योगदान के सम्बंध में राहुल जी लिखते हैं- "चोङ्-स-पा सिर्फ एक सुधारवादी बौद्ध सम्प्रदाय का संस्थापक ही नहीं था, बल्कि वह एक उच्चकोटि का दार्शनिक और विद्वान भी था। उसने तथा उसके योग्य शिष्यों जम-थङ्, शाक्य-ए-शेष और दर्गे-दुन-ड.ब ने गं-दन, सेरा, डेपुङ्, टेशी-ल्हुन्पो जैसे विशाल विद्या

⁷ वही, पृ० सं० – 40-41

केंद्र स्थापित किए, जिनमें लद्दाख, कन्नौर, नेपाल, भूटान और तिब्बत के भिन्न-भिन्न भागों के विद्यार्थी ही नहीं आते थे, बल्कि वेल्गा के पश्चिम तट, मंगोलिया और बैकाल तक के भी हजारों विद्यार्थी विद्याध्ययन करते थे। चोड़-ख-पा का बौद्ध दर्शन एवं धर्म में बहुत योगदान रहा, जिसकी शोधपरक व्याख्या राहुल जी ने की है। बौद्ध दर्शन के विकास में राहुल सांकृत्यायन बौद्ध दार्शनिकों पर तो लेखनी चलाई ही है। साथ ही साथ उन्होंने खुद 'बौद्ध-दर्शन' पर अनेक गवेशात्मक लेख लिखा है। इन लेखों में बुद्ध के दार्शनिक तथ्यों जैसे – प्रतीत्यसमुत्पाद, मध्यप्रतिपदा, क्षणिकवाद, अनित्यवाद, अभौतिकवाद आदि की मौलिक स्थापनाएँ की है। बुद्ध द्वारा प्रवर्तित – प्रतीत्यसमुत्पाद को उन्होंने बौद्ध दर्शन का मूल माना है।

राहुल सांकृत्यायन का बौद्ध दर्शन के विकास में अमूल्य योगदान रहा है। बौद्ध संसार में भारत ही नहीं पूरा विश्व अनभिज्ञ था। दुर्गम मठों एवं विहारों में पड़े बौद्ध दार्शनिकों के दुर्लभ ज्ञानराशि को उन्होंने पहचाना और उसे मूल अथवा अनुवाद कर जनप्रेषित किया।

कला और संस्कृति, भाषा और साहित्य इतिहास और पुरातत्व, धर्म और राजनीति, दर्शन और अध्यात्म को एक साथ साधने वाला साधक विरले ही मिलता है। राहुल जी अपनी अद्भुत मेधा, जांबान यायावरी, बहुआयामी कृतित्व, बहुभाषा विज्ञता की विलक्षण प्रतिभा से ज्ञान क्षितिज पर सदैव देदीप्यमान रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :

1. राहुल, सांकृत्यायन; तिब्बत में बौद्ध-धर्म, किताब महल, इलाहाबाद : प्रथम संस्करण, 1948.
2. राहुल, सांकृत्यायन; पालि साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली : 2006.
3. राहुल, सांकृत्यायन; पाँच बौद्ध दार्शनिक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली : 2008.
4. राहुल, सांकृत्यायन; बुद्धचर्या; गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली : 1930.
5. उपाध्याय, आचार्य बलदेव; बौद्ध-दर्शन-मीमांसा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी: पंचम संस्करण, 1999.
6. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली, भारतीय दर्शन, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली : 1986.